6. निम्नलिखित में किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिये : (9×2=18)

(क) प्रेमचंदयुगीन उपन्यास

(ख) धर्मवीर भारतीय का योगदान

(ग) कर्मभूमि उपन्यास के आधार पर सुखदा का चरित्र-चित्रण

(घ) चित्रा-मुद्गल

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 6130 **J**

Unique Paper Code : 2052102403

Name of the Paper : हिंदी उपन्यास

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi / (DSC)**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. हिन्दी उपन्यास के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए इसकी विकास यात्रा पर प्रकाश डालिये। (15)

अथवा

हिंदी उपन्यास की प्रमुख प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिये।

2. श्री निवास दास अथवा प्रेमचंद का साहित्यिक योगदान लिखिये। (15)

3. 'कर्मभूमि' उपन्यास की तात्विक समीक्षा कीजिये। (15)

अथवा

"कर्मभूमि उपन्यास स्वतंत्रता आंदोलन का दस्तावेज है", इस कथन के आलोक में वर्णित समस्याओं पर प्रकाश डालिये।

4. 'रागदरबारी' उपन्यास में चित्रित सामाजिक यथार्थ को स्पष्ट कीजिये। (15)

अथवा

'रागदरबारी' उपन्यास के शीर्षक की प्रतीकात्मकता स्पष्ट करते हुए वैद्य जी के चरित्र पर प्रकाश डालिये।

5. निम्नलिखित में किन्हीं **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (12)

(क) इस इलाके के ज़मींदार एक महन्तजी थे। कारकून और मुख्तार उन्हीं के चेले-चापड़ थे। इसलिए लगान बराबर वसूल होता जाता था। ठाकुरद्वारे में कोई-न-कोई उत्सव होता ही रहता था। कभी ठाकुरजी का जन्म है, कभी ब्याह है, कभी यज्ञोपवीत है, कभी झूला है, कभी जल-विहार है। असामियों को इन अवसरों पर बेगार देनी पड़ती थी; भेंट - न्योछावर पूजा-चढ़ावा आदि नामों

से दस्तूरी चुकानी पड़ती थी; लेकिन धर्म के मुआमले में कौन मुँह खोलता? धर्म-संकट सबसे बड़ा संकट है। फिर इलाके के काश्तकार सभी नीच जातियों के लोग थे। गाँव पीछे दो-चार घर ब्राह्मण-क्षत्रियों के थे भी, तो उनकी सहानुभूति असामियों की ओर न होकर महन्तजी की ओर थी। किसी-न-किसी रूप में वे सभी महन्तजी के सेवक थे। असामियों को उन्हें प्रसन्न रखना पड़ता था। बेचारे एक तो गरीब, ऋण के बोझ से दबे हुए, दूसरे मूर्ख, न क़ायदा जानें न क़ानून; महन्तजी जितना चाहें इजाफ़ा करें, जब चाहें बेदखल करें, किसी में बोलने का साहस न था।

अथवा

(ख) शहर के एक कोने में ऊँची चहारदीवारी से घिरा हुआ एक लम्बा-चौड़ा बँगला था, जिसकी बनावट से ही लगता था कि वह किसी ताल्लुकेदार को किराये पर रहने के लिए उठा दिया था।

बँगले के एक कोनेवाले कमरे में जिला विद्यालय-निरीक्षक का दफ्तर था, उसे छोड़कर बाकी बँगले में उनका निवास स्थान था। उनके रहने के पूरे हिस्से का किराया सरकार-उसे दफ्तर समझकर देती थी। दफ्तर का पूरा किराया जिला विद्यालय निरीक्षक अपने मकान के नाम पर देते थे। इस तरह के मैत्रीपूर्ण समझौते को अंग्रेजी में 'ऑफिस-कम-रेजीडेन्स' कहा जाता है। हिन्दी में उसे 'ऑफिस-कम-रेजीडेन्स ज्यादा' कहते हैं।